वापसी

सतीश बलराम अग्निहोत्री

'**ट्रिंग** ट्रिंग ट्रिंग!' श्यामली ने झुँझलाकर अलार्म बन्द किया और उनींदी आँखों से रसोई की ओर बढ़ चली, जाते-जाते उसने बगल के बिस्तर पर नज़र डाली और बुदबुदाई, "पता नहीं, हज़रत कब लौटे हैं।"

दरवाज़े पर दूधवाला बोतलें रख गया था। उन्हें लाकर श्यामली ने गैस पर दूध चढ़ाया। मेघना को सुबह-सुबह स्कूल जाना होता। उसे स्कूल बस में चढ़ाकर फिर वह स्वयं तैयार होती थी कॉलेज जाने के लिए। इस बीच नाश्ता भी बनता और डुखनी को हिदायतें भी मिलतीं – खाना क्या बनना है, सौदा क्या आएगा, कौन-से कपड़ों पर इस्तिरी होनी है। उसके निकलने तक प्रोफेसर शैलायन बिस्तर में ही रहते थे। उनका भी क्या! प्रयोगशाला पास और पढ़ाने का झंझट भी नहीं, जबसे उन्हें शोध के लिए तीन सालों की फेलोशिप जो मिल गई थी।

श्यामली इस फेलोशिप का मज़ाक उड़ाया करती, "निठल्लेपन के लिए तनख्वाह है ये!", पर इतना ज़रूर मानती थी कि प्रोफेसर उसकी दिनचर्या में बाधा नहीं डालते थे। मेघना के स्कूल जाने से पहले, उनके साथ सुबह-सुबह एक ग्लास नींबू पानी पीने के बाद श्यामली की छुट्टी, फिर लंच टेबल पर ही बातें होती थीं।

पर सच पूछा जाए तो श्यामली को पहले वाले दिन ही अच्छे लगते थे। तब प्रोफेसर उसे हर चीज़ के लिए हाँक लगाया करते थे, "श्यामू, मेरा लाइटर वापस करो! श्यामू, मेरे नोट्स पर तुम्हारी क्या राय है? तुम्हारा जर्नल कहाँ है?" से लेकर "कमीज़ कौन-सी पहनूँ? आज किसे बुलाया है डिनर पर?" तक, न जाने क्या-क्या।

"शुक्र है, अपना नाम मुझसे नहीं पूछ लेते!", श्यामली कहा करती। पर अब? तब के शैलायन और अब के शैलायन में ज़मीन-आसमान का फर्क आ गया था। खुशगवार, मिलनसार, हँसोड़, चेन-स्मोकर, महफिलों की जान – अंशु शैलायन, अब गम्भीर, अन्तर्मुख, महफिलों से कटे हुए, किताबों में डूबे.... सिगरेट की जगह मानो अध्यात्म ने ले ली हो। यह अध्यात्म का चक्कर हठात् नहीं पनपा था, न ही यह परिवर्तन प्रोफेसर में अचानक आया था। पिछले पाँच-छह सालों में वे धीरे-धीरे बदले थे। और बदल गई थी उनकी रुचियाँ, स्वभाव और शोध के विषय भी। रसायन शास्त्र से जीव विज्ञान और जीव

विज्ञान से जेनेटिक्स और उत्क्रान्तिवाद, और उन्हें तीन साल की फेलोशिप भी इन नई रुचि के विषयों में ही मिली थी।

* * *

श्यामली को आज भी याद है जब शैलायन की फेलोशिप का विषय उनके विभाग में चर्चा का विषय बन गया था। शैलायन के कई मित्रों ने श्यामली से पूछा भी था कि कहीं शैलायन परेशान तो नहीं हैं!!! कहीं उन दोनों के बीच कोई दरार तो नहीं आ रही! पहले तो श्यामली खुद अचम्भा व्यक्त करती, फिर सोचती कि यह थोड़े दिनों का चक्कर होगा पर शैलायन बदलते चले गए।

शुरू-शुरू में श्यामली से वे रसायन शास्त्र और जेनेटिक्स के आधुनिकतम आदान-प्रदान की चर्चा किया करते थे। पर जैसे-जैसे ये विषय गूढ़ बनते गए, उन दोनों के बीच संवाद घटने लगा। शैलायन अन्तर्मुख होने लगे। उनका अधिक-से-अधिक समय प्रयोगशाला में गुज़रने लगा।

हाँ, मेघना के साथ उनकी गहरी छनती। सारी व्यस्तताओं के और अपने कोकून में सिमट जाने के बावजूद उनके शाम के डेढ़ से दो घण्टों पर मेघना का पूरा एकाधिकार था। उसके साथ खेलना, उसकी पढ़ाई, कहानियाँ। श्यामली को रश्क इस बात का होता था कि उसके लिए कोई समय नियत क्यों नहीं है।

उसके विचारों को कुछ झटका-सा लगा। दूध उबलने को था। मेघना के ड्रेस पर इस्तिरी का हल्का हाथ फेरकर श्यामली ने उसे जल्दी तैयार होने को कहा और नींबू पानी के दो गिलास लेकर बेडरूम की ओर चल दी।

"नींबू पानी रखा हुआ है।" बिन्दी लगाते-लगाते उसने कहा। बिस्तर के लिहाफ में थोड़ी-सी हरकत हुई, शैलायन आदत के मुताबिक करवट बदलकर लिहाफ में और दुबक गए।

"उठो भी! रात को कितनी देर से आए?"

"यही कोई दो बजे," नींद से बोझिल स्वर लिहाफ के अन्दर से निकले। शैलायन ने हाथ बाहर निकाला और गिलास उठाया। आईने में बन-सँवरती श्यामली चीखी, "तुम्हारे हाथ को क्या हुआ है?"

चीख की आवाज़ मेघना ने भी सुनी और अन्दर आती डुखनी ने भी। दोनों दौड़े-दौड़े बेडरूम के पास आए। अब चीखने की बारी उनकी थी। आईने के सामने पत्ते की तरह थरथराती श्यामली और बिस्तर पर... बिस्तर पर प्रोफेसर शैलायन के कपड़े पहना हुआ एक बन्दर। 'हाँ, बन्दर ही तो है! पर कपड़े पहना हुआ, वह भी पापा के और आवाज़ भी उनके ही जैसी', यह सोचकर मेघना चिल्लाई।

"चिल्ला क्यों रही हो?"

बेचारी इस्मत को अभी भी याद है, किस बदहवास हालत में डुखनी ने उनके घर का दरवाज़ा खटखटाया था। आँखें मलते-मलते वे बिफरने जा ही रही थीं कि डुखनी दहाड़ मारकर रो दी थी, "दीदी... भूत... भूत... टोना... टोना..." सात दिन तक वह अस्पताल में पड़ी रही थी।

घबराई-सी इस्मत जब बगल के बंगले में घुसीं तो सामने का दृश्य देखकर वे भी अवाक-सी रह गईं। बिस्तर पर रोती श्यामली, अवाक खड़ी मेघना और श्यामली की पीठ थपथपाता और उससे बातें करता एक बन्दर!

उन्हें देखते ही मेघना उनसे लिपट गई, "आंटी! आंटी! पिताजी को देखो क्या हो गया है..." पिताजी...? इस्मत को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ, मगर गाउन तो शैलायन का ही था, खुद इस्मत ने उन्हें माउंट आबू से लौटने पर भेंट में दिया था। तभी बन्दर ने उन्हें सम्बोधित किया, "यार इस्मत, पहले दरवाज़ा बन्द कर ले।" मंत्रचालित और सम्मोहित-सी इस्मत ने पहले दरवाज़ा बन्द किया और वापस आकर फटी-फटी नज़रों से बन्दर... नहीं प्रोफेसर शैलायन को देखने लगीं।

"एक मेहरबानी करो, तुम अपना धीरज मत खोओ। देखो, मैं भी अपने आप पर काबू रखे हुए हूँ।" बन्दर के

गले से आवाज़ निकली।

"पर यह सब हो क्या रहा है?" इस्मत ने पूछा।

"यार, मुझे भी समझ में नहीं आ रहा है। मैंने भी आईना देखा है पर पता नहीं... शायद रात के प्रयोग में कुछ गड़बड़ हो गई है। लेकिन पहले तुम श्यामली को समझाओ।"

"प्रयोग में गड़बड़? पर कल रात जब मैं वापस लौटी तो तुम अध्यात्मानन्द जी के साथ थे।"

"यह उसी मरदूद का काम है दीदी!" श्यामली रो पड़ी, "उसी ने शैलायन का ब्रेनवॉश किया है! और जादू-टोना भी। अब, देखो... उसे तो..."

"श्यामू, स्टॉप इट!" शैलायन गरजे, "बचकानी बातें मत करो!"

इससे पहले कि बात बढ़ती, इस्मत आगे आईं, "पहले इससे निपटने की बात सोचो, यह तो एक विकट समस्या है। मैं स्टीव को बुलाती हूँ।" एक बार संयत हो जाने के बाद उनका दिमाग काफी तेज़ दौड़ा। बात छोटी-मोटी नहीं बल्कि धमाकेदार थी। उसे फैलने से रोकना था, कम-से-कम कुछ समय के लिए। इस्मत मेघना को दूसरे कमरे में ले गईं, उसे शान्त रहने के लिए समझाया, खुद के बंगले दौड़ी-दौड़ी गईं, अपने पति, स्टीव, को जल्दी में थोड़ी-बहुत बात समझाई और डुखनी के पास अपने बड़े लड़के को तैनात किया। उसे सख्त हिदायत दी कि डुखनी को और किसी के सामने बोलने न दे और फौरन डॉक्टर को फोन कर घर बुला ले।

प्रोफेसर शैलायन के घर के अहाते में घुसते-घुसते इस्मत और स्टीव को श्रीमान चटर्जी ने पकड़ा, "जोड़ी कहाँ सुबह-सुबह? और यह चीखने की आवाज़ क्यों आ रही थी?" श्री चटर्जी पूरे केन्द्र में 'बी.बी.सी.' नाम से प्रसिद्ध थे। यह महज़ इत्तेफाक ही था कि उनके नाम के आद्यक्षर भी यही थे 'बिनोद बाला चटर्जी'।

"कोई मारपीट नहीं हुई भैया, बस श्यामली की साड़ी पर तिलचट्टा चढ़ गया था।" स्टीव बोले। उन्हें पता था कि शाम तक तिलचट्टे की खबर पूरी कॉलोनी में फैल चुकी होगी। शैलायन को देखकर स्टीव भी सकते में आ गए, पर उन्होंने अपने आप को सँभाला। उन्हें वहीं छोड़कर इस्मत ने शैलायन से कहा, "सुनो, डायरेक्टर को कम-से-कम खबर कर देते हैं और आज तो सी.एल. ले ही लो। लेकिन तुम पहले मुझे बताओ कि हुआ क्या है।"

जो कुछ उनकी समझ में आया, वह यह था कि प्रोफेसर शैलायन अपनी शोध के सिलसिले में उत्क्रान्ति के अध्ययन में जुटे थे। इस दौरान उनका रुझान भारतीय अध्यात्मिक साहित्य की ओर भी बढ़ा, खासकर जब से वे स्वामी अध्यात्मानन्द के सम्पर्क में आए। अध्यात्मानन्द खुद न्यूक्लियर विज्ञान के एक विद्वान थे,

पर उन्होंने सब कुछ त्याग कर आश्रम जीवन ग्रहण कर लिया था। इन दोनों को श्री अरविन्द की अतिमानव की कल्पना ने आकर्षित किया था और उसे मूर्त रूप देने के लिए वे पिछले दो सालों से लगे हुए थे।

"और कल रात हमारा एक अहम प्रयोग होने वाला था जिसमें हम प्रकृति में होने वाली उत्क्रान्ति की धीमी गति से परे निकलकर, ऐसी छलाँग लगाने वाले थे जिससे अतिमानव का निर्माण होता।"

"और जनाब, आप बन गए बन्दर! इसे कहते हैं 'चौबे बनने चले, दुबे बनकर लौटे'!" इस्मत ने सर पर हाथ मारा, "पर वहाँ से घर आए तो वॉचमैन ने नहीं देखा तुम्हें?"

"अरे नहीं यार! तब तक मैं ठीक था! तब तक क्या, गाउन पहनकर सोने तक ठीक था, पर सवेरे..."

"और स्वामी जी कहाँ हैं?"

"यही तो घोटाला हुआ है! उन्हें आज तड़के जाना था तो हमने रात को प्रयोग सम्पन्न किया और वे सुबह 5:30 की उड़ान से चले गए हैं।"

"पर उन्हें जाना कहाँ है?"

"हिमालय में कहीं अज्ञात जगह पर रहेंगे और कोई एक साल बाद ही लौटेंगे।"

"भले आदमी! उन्हें रोकना चाहिए और अगर इंडियन एयरलाइंस की उड़ान है तो विलम्ब अवश्य होगा।"

पर हवाई अड्डे के पूछताछ कक्ष

ने बड़े फक्र के साथ बताया कि उड़ान ठीक समय पर जा चुकी थी। यही नहीं, उसे जम्मू पहुँचे कोई डेढ़ घण्टा हो चुका था।

डॉक्टर दोराईस्वामी को जब सुबह-सुबह इस्मत का फोन आया तो उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि इस्मत कैसी अति गोपनीय और महत्वपूर्ण बात पर उनसे चर्चा करने आ रही हैं। उन्होंने तो यहाँ तक कह डाला था कि अगर बात वाकई अ.गो.मा. न हुई तो अगला इंक्रीमेंट बन्द कर दूँगी। पर जब इस्मत ने उन्हें सारी बात बताई तो वे कुछ क्षणों तक फटी-फटी आँखों से उन्हें देखती रह गईं और फिर झटपट वे कपड़े बदलकर इस्मत के स्कूटर पर बैठकर शैलायन के घर की ओर रवाना हो चुकी थीं।

* * *

श्रीमान चटर्जी यानी बी.बी.सी. की अनुभवी आँखों से यह छुपा न रह सका। सूट-बूट के बिना घर से बाहर न निकलने वाली संस्थान की निदेशक डॉ. दोराईस्वामी का महज़ सादी पोशाक में आना और वह भी इस्मत के स्कूटर पर... दाल में कुछ काला ज़रूर था। मेघना भी स्कूल नहीं गई थी। श्यामली चीखी ज़रूर थी। इस्मत और स्टीव जल्दी-जल्दी शैलायन के घर में घुसे थे और डुखनी नज़र नहीं आ रही थी। ज़रूर झगड़ा... नहीं, मारपीट पर नौबत आई होगी... हे ईश्वर! श्यामली को घायल तो नहीं कर दिया? वैसे भी पिछले कुछ सालों से जोड़े में दरारें पड़ती लग रही थीं। ज़रूर घायल कर दिया होगा, तभी तो डायरेक्टर के आने की नौबत आ गई है। उनके तर्क को और पुष्टि मिली जब डॉक्टर धुर्वे की कार आती नज़र आई। पर यह क्या? उनकी कार इस्मत के घर पर? पर वे उतरे तो बैग लेकर ही हैं। मानव, इस्मत का बड़ा लड़का, उन्हें लेकर अन्दर गया है। उनकी उत्सुकता और बढ़ी। स्टीव और इस्मत अभी तक श्यामली के घर में ही हैं। तो क्या श्यामली घर छोड़कर यहाँ आ गई है?

उन्होंने मामले की छानबीन के लिए इस्मत के घर का रुख किया। हाथ में चीनी की कटोरी ले चटर्जी अंकल को देखकर मानव को थोड़ा आश्चर्य हुआ। "नमस्ते अंकल, सुबह-सुबह?"

"नहीं बेटे, यह चीनी ले गया था तो वापस करने आया हूँ। माँ नहीं हैं?"

"जी नहीं, वे शैलायन अंकल के यहाँ गई हैं। मैं रख लेता हूँ चीनी।"

मानव के चेहरे पर 'कृपा करके फुटिए' का भाव साफ था, पर अंकल को अपने काम की चीज़ दिख गई थी – डॉक्टर धुर्वे किसी को देख रहे थे पर वह श्यामली नहीं थी।

"अच्छा बेटे, यह रख लो। वो मेघना तो यहाँ नहीं आई?"

"अरे नहीं अंकल, वह तो डुखनी है।" मानव ने उनकी निगाह ताड़ ली। "उसके सर में चोट आ गई थी और अंकल का फोन खराब था तो..."

"अच्छा-अच्छा, मैं चलूँ..."

"जी नमस्ते, अंकल!" चैन की साँस लेकर मानव ने दरवाज़ा बन्द किया पर अंकल का विचार-चक्र और तेज़ी-से चलने लगा।

* * *

जब तक शैलायन के साथ हुए हादसे की खबर विज्ञान और टेक्नोलॉजी विभाग के सेक्रेटरी, उनके ज़रिए मंत्रिमण्डल सचिव, प्रधानमंत्री के निजी सचिव और फिर खुद प्रधानमंत्री तक पहुँची, तब तक संस्थान के बी. बी.सी. के ज़रिए आधी कॉलोनी को पता चल चुका था कि श्यामली और शैलायन में झड़प हुई है। श्यामली को प्रोफेसर ने ज़रूर घायल कर दिया है और हो-न-हो, इसकी वजह है कि श्यामली ने शैलायन और डुखनी को रंगे हाथों पकड़ लिया है। आज भी श्रीमान शैलायन कभी-कभी हँसकर कह देते हैं, "दादा, वह देखो मेरी गर्ल फ्रेंड।" ऐसे में श्रीमान चटर्जी के पास झेंपने के अलावा कोई चारा नहीं रहता।

पर उस दिन तो जितने मुँह उतनी बेसिर-पैर की बातें। और जब विभागीय सचिव और मंत्रिमण्डल सचिव की गाड़ियाँ, उनके आगे-पीछे मोटरसाइकिल पर दो कमाण्डो राइडर और लाल बत्ती वाली पेट्रोलिंग जीप प्रोफेसर शैलायन के घर के बाहर रुकीं तो सबको विश्वास हो गया था कि बात बहुत ऊपर तक पहुँच गई है।

मंत्रिमण्डल सचिव श्री थेजा अंगामी अनुभवी प्रशासक थे पर ऐसी घटना से उनका भी पाला नहीं पड़ा था। उन्होंने सबसे पहला काम तो यह किया कि प्रोफेसर शैलायन के घर पर सादी पोशाक में सुरक्षा गार्ड तैनात कर दिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से मामला जो भी हो, उनकी दृष्टि से शैलायन की सुरक्षा सबसे अहम बात थी। उनके इस परिवर्तन का समाचार अधिक देर तक छुपाया नहीं जा सकता था। उसके बाद पता नहीं किन देशों की सुरक्षा एजेंसियाँ उन्हें उड़ाने के चक्करों में लग जाएँ। उन्होंने डॉक्टर दोराईस्वामी को सलाह दी कि इस बात को कम-से-कम कुछ घण्टों तक गोपनीय रखा जाए। इस बीच वे स्वयं प्रधानमंत्री से बात कर लेंगे और यह घर तब तक सुरक्षा गार्डों की देखरेख में रहेगा। जाने से पहले उन्होंने श्यामली की पीठ थपथपाकर उसे ढाढ़स बँधाया, "धीरज रखो, कोई रास्ता ज़रूर निकल आएगा।" मेघना को उठाकर उसके सर पर हाथ फेरकर कहा, "ब्रेव गर्ल!" और डॉक्टर रंगाराव को लेकर सीधा प्रधानमंत्री के निवास की ओर चल पड़े। तब तक प्रोफेसर शैलायन के घर के बाहर छोटी-सी

भीड़ इकट्ठी हो गई थी।

इस्मत ने जब भीड़ में फैलती खबर को सुना तो सर पीटकर रह गईं। दोराईस्वामी ने उन्हें सही माजरा नहीं बताने का कड़ा निर्देश दिया था। बिना 'ऊपरी आदेश' के वे कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहती थीं। झुँझलाई इस्मत ने श्यामली को परिस्थिति की गुरुता बताई। अन्त में तय हुआ कि श्यामली अपने आप को सँभालें, स्टीव के साथ इस्मत के घर जाएँ और उत्सुक लोगों को इतना ही बताएँ कि शैलायन ने एक बहुत ही बड़ा आविष्कार किया है। यही बात इस्मत और डॉक्टर दोराईस्वामी दोहराएँ और बाकी प्रश्नों पर चुप्पी साधी जाए। तिलचट्टे की कहानी बरकरार रहे।

* * *

तरकीब काफी हद तक काम कर गई पर सच पूछा जाए तो शंकालु पड़ोसी दूसरे दिन की प्रेस कॉन्फ्रेंस तक आश्वस्त नहीं हुए थे। विज्ञान भवन में हुई पत्रकार परिषद की कॉन्फ्रेंस में तिल रखने की जगह नहीं थी। प्रोफेसर शैलायन ने न अपने प्रयोग के बारे में विस्तार से बताया, न स्वामी अध्यात्मानन्द के बारे में। वे बस इतना कहकर चुप्पी साध गए कि कुछ नए प्रयोगों के दौरान किसी अज्ञात कारणों से उनमें यह परिवर्तन आ गया है। फिर भी, यह परिवर्तन ही पत्रकारों और आम जनता के लिए अत्यन्त सनसनीखेज़ था।

अगले कई महीनों तक शैलायन एक अद्‌भुत अजूबा बने रहे। कइयों ने उन्हें फ्रॉड कहा, कइयों ने इसे जादू-टोना बताया। श्यामली और मेघना की निजी ज़िन्दगियाँ भी इसी उत्सुकता की बलि चढ़ गईं। खैर, श्यामली ने तो छुट्टी ले ली पर मेघना का स्कूल जाना दूभर हो गया।

पर इन सबसे अलग, प्रोफेसर शैलायन चुनिन्दा वैज्ञानिकों के एक दल के साथ उन में आए परिवर्तन के गोपनीय अध्ययन में लगे रहे, और राष्ट्रीय जैविक अनुसन्धान केन्द्र का सारा क्षेत्र एक गोपनीय गुत्थी बनकर रह गया। एक परिवर्तन जो अध्ययन दल को बहुत ही जल्दी नज़र आया, वह था प्रोफेसर शैलायन की प्रखर प्रतिभा, जो उनके पहले की प्रतिभा से कई गुना अधिक थी। उन्होंने गणित के ऐसे-ऐसे समझ न आने वाले प्रमेयों को सुलझाना आरम्भ किया कि अध्ययन दल और दुनियाभर के वैज्ञानिकों ने दाँतों तले उँगलियाँ दबा लीं। उन्होंने उष्मागतिकी यानी थर्मोडायनेमिक्स के सिद्धान्तों के जटिल जीव-कोशिकाओं के अध्ययन में उपयोग करने के नए रास्ते सुझाए। डीएनए और आरएनए की संरचना के कई गूढ़ प्रश्नों के समाधान के लिए प्रयोग निर्धारित किए; संक्षेप में, वे ज्ञान की ऐसी खान बन गए जिसने अध्ययन दल को 'लूट सके तो लूट' की स्थिति में ला दिया।

लेकिन उसके साथ ही वे बहुत शान्त और निर्विकार प्रकृति के होने लग गए और एक निश्चित समय तक के काम के बाद बाकी समय खेलने, बागवानी, प्रार्थना वगैरह में लगाने लगे। उनके सारे काम ही अब चर्चा का विषय बन रहे थे। टीवी पर उनके बैडमिंटन मैच का लाइव प्रसारण हुआ जहाँ उन्होंने राष्ट्रीय चैंपियन आहूजा के छक्के छुड़ा दिए। उन्हें भी अब इस नए अवतार में मज़ा आने लगा था। उनका नाम पड़ा था 'सुपर इंटेलिजेंट चिम्पैंज़ी'।

पर अन्दर ही अन्दर वे इस बात पर विचार करते रहते थे कि यह परिवर्तन कैसे हुआ। उनकी गणना के अनुसार उन्हें अतिमानव में बदलना था। बुद्धि और मेधा के हिसाब से तो परिवर्तन सही दिशा में हुआ था, पर चिम्पैंज़ी की काया? इसका अनुमान स्वयं अध्यात्मानन्द जी भी नहीं लगा पाए थे। प्रोफेसर शैलायन ने उत्क्रान्ति पर जितनी पाठ्य सामग्री थी, छान मारी। अपने सहयोगी वैज्ञानिकों के साथ चर्चा की, विश्व के चोटी के जीवशास्त्री उनसे मिलने आए पर यह पहेली, पहेली ही बनी रही।

इस बीच श्यामली ने अपने आप को सँभाल लिया था। उसे पता नहीं था कि वह इस परिस्थिति से कभी उबर भी पाएगी या नहीं। वह अध्यात्मानन्द जी को मन ही मन इस सारी घटना के लिए दोषी व ज़िम्मेदार ठहराती, पर शैलायन से उसने प्रकट तौर पर कुछ नहीं कहा।

मेघना भी कुछ दिनों बाद सहज हो गई थी। पापा के साथ उसके डेढ़ से दो घण्टे पहले की ही तरह गुज़रते। कई बार तो उसे ज़्यादा मज़ा आता जब पापा पेड़ पर आनन-फानन में चढ़ जाते और उसे पीठ पर लेकर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद जाते। कुछ समय के लिए यह परिवर्तन बुरा नहीं था, पर पापा हमेशा के लिए बन्दर ही रह गए तो?

श्यामली को वह दिन आज भी याद है जब शैलायन के दिमाग में एक नई खुराफात उमड़ी थी। मेघना उस दिन न जाने कहाँ से पिछले ओलम्पिक खेलों का एक वीडियो टेप उठा लाई थी। खेलों का शानदार समापन समारोह देखते-देखते उसने मुँह बिचकाया और बोली, "पापा! पापा! हम लोगों को क्यों एक भी मेडल नहीं मिलता?"

"मिला करता था बेटे, हॉकी में मिला करता था, पर वह भी गया। बेटे, हमारे यहाँ खेलकूद को महत्व नहीं दिया जाता।"

"लेकिन पापा, सच्ची बोलूँ, लॉन्ग जम्प में तो आप इन से अच्छा कूद लेते हैं।"

"लॉन्ग जम्प ही क्यों, हाई जम्प में क्या मैं किसी से कम हूँ?"

"पापा, आप क्यों नहीं भाग लेते हैं इन खेलों में? कम-से-कम एक-दो मेडल तो हमें मिल ही जाएँगे।"

"मैं भाग लूँ? मैं!?" हँसते-हँसते शैलायन की आँखों में आँसू आ गए। "बेटे, मैं अब इस उम्र में..." पर अचानक उनकी हँसी में ब्रेक लग गया और उन्होंने कहा, "क्यों नहीं! श्यामू क्या खयाल है तुम्हारा?"

"मेरा खयाल है कि तुम सठिया गए हो!"

"सठिया गया? बैडमिंटन में आहूजा की क्या हालत बनाई थी, याद है?"

"हाँ-हाँ, पर वह प्रदर्शन मैच था। ओलम्पिक में तुम्हें कौन भाग लेने देगा? तुम तो..."

"रुक क्यों गई? कह डालो कि तुम बन्दर जो ठहरे! पर मैं तुम्हें कोई दोष नहीं देता, वे लोग भी शायद यही कहें।"

अपनी रुलाई को रोकते हुए श्यामली अपने कमरे में भागी चली आई। आज पहली बार ऐसी बात उसकी ज़ुबान पर आई थी। शैलायन ने उसकी बात का बुरा नहीं माना था।

अगले महीनेभर मेघना की शामें कितनी जल्दी गुज़रीं, यह उसे भी पता नहीं चला। वह खुशी-खुशी अपने पापा के टॉप सीक्रेट काम में मदद करती रही। महीने के अन्त में, जब

ओलम्पिक में तुम्हें कौन भाग लेने देगा? तुम तो..."

"रुक क्यों गई? कह डालो कि तुम बन्दर जो ठहरे! पर मैं तुम्हें कोई

श्री थेजा अंगामी ने शैलायन की माँग सुनी तो उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। प्रोफेसर शैलायन ने उन्हें अपनी बात समझाई और गुप्तता का

आश्वासन लिया। श्री अंगामी ने फौरन खेल प्राधिकरण से बात कर अपने निजी उद्देश्य के लिए एक खेल कोच मँगवाया और उसे शैलायन के पास भेज दिया।

* * *

राबिया जमाल एक जानी-मानी कोच थीं। एथलेटिक्स में उनकी टक्कर के बहुत कम कोच थे। भारतीय टीम के साथ पिछले ओलम्पिक में जाकर आई थीं और मेडल न मिलने की मायूसी को उन्होंने गहरे झेला था। फिर भी शैलायन के प्रस्ताव को सुनकर वह ठहाका मारकर हँसी थीं, "बाबूजी, तुस्सी पार्ट लोगे?" फिर जब हँसी कम हुई तो उन्होंने वही बात दोहराई, शैलायन के बन्दर होने की। शैलायन ने उन्हें समझाया, कानूनी तौर पर वह अब भी भारतीय नागरिक था, उसे वोट देने का अधिकार था, राशन कार्ड पर नाम था, पढ़ना-लिखना सब अपनी जगह पर था और बुद्धिमत्ता माशाअल्लाह, बहुत थी, फिर वह बन्दर कैसे?

राबिया को बात कुछ जँची और जैसे-जैसे उन्होंने शैलायन की लम्बी कूद, ऊँची कूद, बाधा दौड़ और 110 मीटर दौड़ की करामात देखी, उनकी बाँछें खिलती गईं, उनकी आँखों के सामने मेडल तैरने लगे। अल्लाह-ताला ने चाहा तो पोल वॉल्ट, जिमनास्टिक, पेंटाथलॉन और न जाने क्या-क्या, बशर्ते...

"बाबूजी, बशर्ते आपको परमिशन मिले।"

"वह ज़िम्मा मेरा रहा बीबीजी,

तुस्सी कोच करो मैनू।"

दो महीने के अथक परिश्रम के बाद राबिया ने इस नए विद्यार्थी का लोहा मान लिया। अगर सचमुच इन्हें भारतीय टीम में शामिल कर लिया जाए तो आधा दर्जन मेडल तो आराम-से मिलेंगे। पर क्या उन्हें शामिल किया जा सकेगा? "क्यों न अध्यक्ष जी से बात कर ली जाए?" शैलायन ने इसका ज़िम्मा खुद पर लिया।

* * *

खेल विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष थे मलाई बाबू। इन बेचारे का असली नाम मलय गोस्वामी था पर उनके तिकड़मी गुणों से खीझे हुए विरोधियों ने उसे बिगाड़ डाला था और जैसे-जैसे मलाई हड़प जाने के उनके हथकण्डे प्रकट होने लगे, यार दोस्तों ने भी यह नाम स्वीकार कर लिया था। ठण्डे दिमाग में और चाणक्यीय कूटनीति में उनका कोई सानी मिलना मुश्किल था।

पर ठण्डे दिमाग वाले मलाई बाबू को भी कैबिनेट सेक्रेटरी द्वारा दी गई सीमित और गुप्त पार्टी में अपना दिमाग ठण्डा रखने के लिए व्हिस्की के पैग पर पैग चढ़ाने पड़ गए थे। प्रोफेसर शैलायन का भारतीय टीम में भाग लेना? वह भी ओलम्पिक्स में? उन्होंने सोचने के लिए कुछ मोहलत माँगी, बात सिर्फ उनके मान जाने की ही नहीं थी, प्राधिकरण के अन्य सदस्यों को भी तो बताना होगा।

नतीजतन, एक आपात बैठक बुलाई गई। भारतीय खेल विकास प्राधिकरण के सदस्यों को इस आपात बैठक का कारण समझ में नहीं आया। कई शंकाएँ और कुशंकाएँ उनके मन में उभरीं। न जाने कौन किसका पत्ता काटने के चक्कर में है। हर सदस्य अन्य सदस्य को यही बता पाया कि बैठक की वजह उसे भी नहीं मालूम और अध्यक्ष महोदय ने फोन पर सबको वही एक जवाब दिया था – "वहीं आओ तो पता चले।" हाँ, अपने चहेते मित्र प्रतिफल को इतना उन्होंने ज़रूर कहा था, "यार! इसमें रत्ती भर की राजनीति नहीं है, जिसकी चाहे कसम दिलवा डालो।"

जब अध्यक्ष महोदय ने अपनी तसल्ली कर ली कि सब की उत्सुकता चरम सीमा पर है तो उन्होंने राज़ खोला और सदस्यों को प्रोफेसर शैलायन की कल्पना बताई। यह भी बताया कि राबिया जमाल उन्हें परख चुकी हैं और ट्रेनिंग दे चुकी हैं। पहले तो अधिकांश सदस्य हँसते-हँसते वैसे ही लोटपोट हो गए जैसे राबिया जमाल हुई थीं, पर जैसे-जैसे राबिया ने उनके सामने आँकड़ों की बरसात शुरू की, हँसी की जगह चुप्पी, फिर विस्मय और फिर अविश्वसनीयता ने ले ली। राबिया उस अविश्वसनीयता की दवा अपने साथ लाई थीं, उन्होंने वीसीआर का बटन ऑन किया। अब आधे घण्टे की छुट्टी।

टेप के खत्म हो जाने के बाद हर सदस्य का चेहरा देखने लायक था। मौन को पहले तोड़ा षण्मुगम ने, "यह तो... यह तो... दिस इज़ क्रेज़ी!"

"क्रेज़ी या नॉट क्रेज़ी, सच आपके सामने है," राबिया जमाल ने कहा।

"पर सवाल है, इसका आप करेंगे क्या? शैलायन को थोड़े ही हमारी टीमों में शामिल किया जा सकता है। वह आदमी नहीं बन्दर है। उसे प्रतियोगिता में कैसे...?" चतुर्वेदी जी बोलीं। कई सदस्यों ने उनकी हाँ-में-हाँ मिलाई।

"दोस्तो, इसलिए तो मैंने यह आपात बैठक बुलाई है और वह भी इतनी गुप्तता में," अध्यक्ष ने कहा। "अब मेरी बात गौर से सुनिए। पहली बात तो यह है कि ओलम्पिक में हमारे देश का प्रदर्शन एक भावनात्मक मामला है। सब जानते हैं कि यह अच्छा नहीं रहा है। इस प्राधिकरण को बने भी दशक बीत गए लेकिन परिणाम उतने अच्छे नहीं निकल रहे। दूसरी ओर इस प्रोफेसर का प्रदर्शन आपने अभी वीसीआर पर देखा ही है। इसमें तो कोई शक ही नहीं कि यह अच्छा है, वजह चाहे कुछ भी हो। अब अगर शैलायन अपनी बात पर अड़ा रहा तो हमारे नकार देने की स्थिति में वह ज़रूर अन्य दरवाज़े खट-खटाएगा। अगर उसे हर किसी ने मना किया तो अलग बात है, पर मान लीजिए किसी ने उसे तरजीह दे दी तो उसकी खोज का सेहरा उनके सर पर बँधेगा। आप मेरी बात...."

"अरे मलाई बाबू, साफ-साफ कह दीजिए न कि ओलम्पिक एसोसिएशन वाले कहीं इनको उड़ाकर ले गए तो हम लोग टापते रह जाएँगे।" अखण्ड चौधरी की भाषा उनके नाम के अनुरूप ही थी, पर उनकी बात में वज़न था।

"आपने मेरे मुँह की बात छीन ली, अखण्ड बाबू! मेरा विचार यही था। आप ज़रा सोचिए, अगर एसोसिएशन ने मना कर दिया तब तो हमारा कुछ नहीं बिगड़ना, पर अगर उन्होंने हाँ कर दी तब तो शैलायन की शोहरत में मुख्य हिस्सेदार हम ही होंगे।"

बात सदस्यों को जँची। अन्त में, तय यही हुआ कि प्राधिकरण क्यों शैलायन को नकारकर ज़िम्मेदारी मोल ले। बेहतर होगा कि उनका केस भारतीय ओलम्पिक एसोसिएशन को सिफारिश के साथ भेज दिया जाए।

पर तिकड़मी दिमाग पर सिर्फ मलाई बाबू का अधिकार थोड़े ही था। भा.ओ.ए. के अध्यक्ष राजा रिपुदमन सिंह भी ताड़ने वाली नज़र रखते थे। फर्क यही था कि उनका दिमाग उतना ठण्डा नहीं था, अतः जब प्राधिकरण की तरफ से शैलायन के भाग लेने का प्रस्ताव आँकड़ों और भारी-भरकम सिफारिश के साथ आया तो उन्होंने उसे ठुकराने का निश्चय किया।

"अरे ज़रा सोचो तो, प्राधिकरण इसे अपना कैंडिडेट दिखाकर वाहवाही लूटना चाहता है, चाहे काम इन्होंने रत्ती भर भी न किया हो।"

"रत्ती भर तो किया है, बड़े साहब! उस राबिया जमाल से कोचिंग करवाकर।" उनके एक समर्थक ने चुटकी ली।

"वह राबिया भी..." बड़े साहब ताव खाकर रह गए। "कमबख्त पूरी एहसान फरामोश है, इतनी फॉरेन ट्रिप्स दिलवाई हैं उसे, फिर भी यह नहीं सोचा कि हमें बताती। आखिर ओलम्पिक टीम में शामिल करना है तो ओलम्पिक एसोसिएशन के ज़रिए आती! क्या हम लोग मना करते? पर नहीं, खेल प्राधिकरण की वफादार बनी है।"

* * *

और इस प्रकार व्यूह रचना हो गई। भारतीय ओलम्पिक एसोसिएशन ने प्राधिकरण का प्रस्ताव यह कहकर ठुकरा दिया कि शैलायन को टीम में शामिल करना नियमों में नहीं बैठेगा। राबिया जमाल के ज़रिए जब प्राधिकरण ने यह खबर प्रोफेसर शैलायन तक पहुँचाई तो उन्हें ज़्यादा आश्चर्य नहीं हुआ। उनसे अधिक मायूस तो खुद राबिया नज़र आ रही थीं। शुरू में उन्हें शैलायन का प्रस्ताव चाहे जितना बेतुका लगा हो पर अब उन्हें इसमें काफी गहरी दिलचस्पी हो

गई थी। काफी देर तक वे शैलायन के साथ माथापच्ची करती रहीं कि अब क्या किया जाए। शैलायन का यही सुझाव था कि प्राधिकरण को एसोसिएशन से यह पूछना चाहिए कि वे कौन-से नियम हैं जिनके तहत उन्होंने शैलायन को टीम में शामिल करने से इन्कार किया है। दूसरी ओर, राबिया को पता था कि प्राधिकरण को ऐसा करने में कोई खास दिलचस्पी नहीं है। अन्त में, दोनों ने यह तय किया कि फिलहाल शैलायन प्राधिकरण को ही चिट्ठी लिखें और इन नियमों के बारे में पूछें।

जो बात शैलायन जाते हुए राबिया से छुपा गए थे, वह यह थी कि उन्हें ऐसी नकार का अन्देशा था इसलिए उन्होंने पिछले कुछ दिनों में इस प्रश्न के कानूनी पहलू छान मारे थे। यही नहीं, उन्होंने इस विषय पर कानूनी सलाह लेने की भी सोची थी। इत्तेफाक से इस्मत का देवर मैथ्यू, देश की प्रसिद्ध वकील श्रीमती एस.एफ. हरि का जूनियर था। अब समय आ ही गया है, उन्होंने सोचा, कि श्रीमती हरि जी से मिला जाए।

जारी...

सतीश बलराम अग्निहोत्री: भारतीय प्रशासनिक सेवा के भूतपूर्व अधिकारी और अब आई.आई.टी. मुम्बई में प्राध्यापक। जन्म रत्नागिरी ज़िले के देवरुख गाँव में हुआ। बचपन बिहार के दरभंगा शहर में गुज़रा जहाँ स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई की। इसके बाद आई.आई.टी. मुम्बई से फिज़िक्स और फिर पर्यावरण विज्ञान में एम.टेक. किया। 1980 से भारतीय प्रशासनिक सेवा में ओडिशा राज्य एवं केन्द्र सरकार में कई विशिष्ट पदों पर 35 साल सेवारत रहे। हिन्दी में विज्ञान कहानियाँ और लेख लिखने की शुरुआत तब की जानी-मानी पत्रिका 'धर्मयुग' से हुई। यह विज्ञान-कथा भी उसी युग में लिखी गई। व्यंग्य रचनाएँ भी लिखते रहते हैं। सम्पर्क - satishagnihotri1955.in

सभी चित्र: उर्वी: चित्रकार, विज़ुअल कलाकार और डिज़ाइनर हैं। सृष्टि इंस्टिट्यूट ऑफ आर्ट एण्ड डिज़ाइन टेक्नोलॉजी, बैंगलोर से अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अब वे अपने काम के ज़रिए एनिमेशन, मूविंग इमेजिज़, कहानी कहन और कविता का सहारा लेते हुए शिक्षा, सामाजिक न्याय और संरक्षण को जानने-समझने की कोशिश कर रही हैं।